जांबाज हंटरवाली नाडिया

नाम तो उनका मेरी इवांस था, लेकिन एक नजूमी मित्र के कहने से उन्होंने अपना नाम बदलकर नाडिया कर लिया था. और जैसा कि उस मित्र ने भविष्यवाणी की थी, स्टेज शो और क्लबों में नाचने वाली मेरी इवांस से नाडिया बनते ही उसकी किस्मत का सितारा चमक उठा. मेरी की मां मारग्रेट इवांस सर्कस में काम करती थी. वह यूनानी वंश से थीं. पिता हरबर्ट इवांस बर्तानवी थे और ब्रिटिश सेना में थे. इवांस दम्पति तब आस्ट्रेलिया के पर्थ शहर में थे जब मेरी का जन्म हुआ. जब तक बेटी किशोरी हुई तब तक मारग्रेट और हरबर्ट भारत आ चुके थे. यहां मेरी ने कुछ दिन मां के पदचिन्हों पर चलकर सर्कस में काम किया. जब वहां मन नहीं लगा तो नर्तकी बनने का फैसला किया और अपनी यह तमन्ना पूरी करने के लिए वह भारत आईं और रूसी नृत्यांगना मैडम एस्त्रात की शिष्या बनकर उनकी मंडली में शामिल हो गईं. इसी सिलसिले में उन्हें भारत घूमने का भी मौका मिला. जब वह लाहौर पहुंचीं तो इंग्लिश क्लब ने उन्हें अपने यहां नृत्य करने के लिए बुला भेजा. जाना-माना क्लब, अच्छा वेतन. नाम भी अब तक मेरी से नाडिया हो चुका था. यहीं लाहौर में नाडिया की मुलाकात वाडिया बंधु होमी और जमशेद से हुई. उस समय दोनों बसंत पिक्चर्स और वाडिया मूवीटोन के बैनर तले फिल्में बना रहे थे.

उन्होंने नाडिया को फिल्मों में काम करने का निमंत्रण दिया. नाडिया ने तुरंत स्वीकार कर लिया. यह बात 1934 की है. उस साल नाडिया की पहली फिल्म आई *नूर-ए यमन*. और फिर *देश दीपक* रिलीज हुई. लेकिन इन फिल्मों में नाडिया हीरोइन नहीं थी. वह इनमें साइड रोल में थीं. दर्शकों ने नाडिया का जलवा पहली बार उनकी तीसरी फिल्म

आस्ट्रेलिया में जन्मी नाडिया जब पच्चीस साल की उम्र में फिल्मों में आई तब किसी ने यह सोचा भी नहीं था कि कभी वह भारतीय फिल्मों की स्टंट क्वीन बनकर चमकेगी. चलती रेलगाड़ी, दौड़ती कारों और भागते घोड़ों पर से जान हथेली पर रखकर वह ऐसे कूद जाती थीं जैसे रस्सी कूद रही हों. जिन्होंने उनकी फिल्में देखी हैं वे नाडिया को कभी नहीं भूल सकते. भूलें भी कैसे? उनकी जैसी जांबाज और जिगर वाली दूसरी हीरोइन और कोई आज तक नहीं हुई

हंटरवाली में देखा, जिसमें वह हीरोइन बनकर आई थीं. नाडिया की चाबुक की मार ने पर्दे पर खलनायक और उसके गिरोह के लोगों के तो होश ठिकाने लगाए ही, देखने वालों के भी रोंगटे खड़े कर दिए. जिस वक्त वह काले मर्दाने कपड़े पहनकर और हंटर फड़फड़ाती पर्दे पर आती थीं तो दर्शक दिल थामकर अगले पल का इंतजार करते थे. इंतजार करते यह देखने के लिए कि जुल्म सहने वालों की यह रहनुमां जुल्म ढाने वालों की किस तरह जमकर धुनाई करती है. नाडिया ने 1935 से 1959 तक फिल्मों में काम किया. 1960 में उन्होंने होमी वाडिया से शादी कर ली. तब उनकी उम्र पचास साल थी. शादी के बाद उन्होंने एक्टिंग छोड़ दी. बाल संवारने और मेकअप करने की ट्रेनिंग ली. शादी के सात साल बाद पति के कहने पर *खिलाड़ी* नाम की एक फिल्म में काम किया. लेकिन नाडिया इसमें हीरोइन नहीं थीं. उनका रोल था स्टंट सिखाने वाली ट्रेनर का. नाडिया जन्म से विदेशी थीं. जवानी तक बर्तानवी माहौल में रहीं. अंग्रेजी उनकी मातृभाषा थी. इसलिए हिन्दी संवाद बोलना उनके लिए समस्या बन गई थी. लेकिन उन्होंने कड़ी मेहनत करके हिन्दी सीखी. उच्चारण सुधारने की भी पूरी कोशिश की. लेकिन वाडिया-बंधु जानते थे कि उन्हें कज्जन, जुबैदा या जमना नहीं बनाया जा सकता. और न ही उस तरह के रोल दिए जा सकते हैं जैसे देविका रानी, दुर्गा खोटे या कानन देवी कर रही थीं. इसलिए नाडिया को एक अलग ही शैली में ढाला गया. उनके रंग-रूप, उनके शारीरिक विकास और उनके सर्कस के अनुभव को ध्यान में रखकर उनके लिए ऐसे कथानक लिखवाए गए जिनमें वह जांबाजी के जौहर दिखा सकें. यह हिन्दी सिनेमा के पर्दे पर नारी का एक नया ही रूप उभरा था. जुल्म से लड़ने वाली निडर, निर्भीक औरत, जरूरत पड़ने पर दौड़ती ट्रेन से छलांग लगा देने वाली, भागते घोड़े की पीठ से कूद जाने वाली, एक छत से दूसरी छत पर कूद जाने वाली और जरूरत पड़ने पर जुल्म ढाने वालों की हंटर से धुनाई कर देने वाली हीरोइन के चाहने वाले तेजी से बढ़ते जा रहे थे.

नाडिया की एक निडर औरत की अलग इमेज बन गई थी. उनके प्रशंसक उन्हें रोते-धोते या आंसू बहाते देख ही नहीं सकते थे. हालांकि नाडिया ने स्टंट फिल्मों में काम किया, लेकिन उनकी फिल्में अर्थहीन नहीं होती थीं. परोक्ष रूप में वह आजादी की याद दिलाती थीं. साम्प्रदायिक सद्भाव का संदेश देती थीं. अपने उचित अधिकारों के लिए लड़ना सिखाती थीं और अत्याचारी को उसके किए की सजा दिलाने में आस्था जगाती थीं. दकियानूसी परम्पराओं को तोड़ने, नेक औरतों को जुल्म से बचाने में नाडिया का पर्दे का चरित्र सदा तत्पर रहता था. उनका सन्नाटेदार

हंटर सामाजिक बुराई के खिलाफ हमेशा जोर की चोट करता था. दर्शक अपनी प्रिय हीरोइन नाडिया को पर्दे पर आहें भरते, आंसू बहाते, विरह के गीत गाते देखना पसंद ही नहीं करते थे. जब कभी उनकी निडर और जांबाजी वाली छवि को जरा भी इमोशनल और भावुक बनाने की कोशिश की गई, उस कोशिश पर पानी फिर गया.

एक किस्सा सुनिए! नाडिया को लेकर एक फिल्म बनी थी, *मौज*. इसमें प्रेम का त्रिकोण था. पहाड़ी सान्याल इसके नायक थे. उनसे प्यार करने वाली दो प्रेमिकाएं थीं नाडिया और कौशल्या. फिल्म रिलीज हुई तो दर्शक चौंक गए. यह क्या! प्यार में भावुक होने वाली और प्रेमी के लिए आहें भरने वाली नाडिया है? नाडिया का यह रूप दर्शक स्वीकार ही नहीं कर पाए. और नतीजे के रूप में *मौज* आते ही फ्लॉप हो गई. इसी तरह एक फिल्म में एक दृश्य था जिसमें नायिका अपने प्रेमी को याद करके आंसू बहा रही है. फिल्म के रशेज देखने वाडिया बंधुओं के डिस्ट्रीब्यूटर्स आए. उन्होंने रशेज देखने के बाद एक आवाज में होमी से कहा–ये शॉट्स काट दें जिसमें नाडिया की आंखों में आंसू दिखाए गए हैं. उनका कहना था, नाडिया के चाहने वाले उसकी आंखों में आंसू नहीं देख सकते. उन्हें यह बात हजम ही नहीं होगी कि नाडिया रोए. आखिर होमी वाडिया को वे शॉट्स फिल्म से निकालने ही पड़े. नाडिया की यादगार फिल्में हैं, 1936 में बनी *हंटरवाली*, 1940 में बनी *बम्बई वाली*, 1942 में बनी *जंगल प्रिंसेस*, 1945 में बनी *स्टंट क्वीन*, 1946 में बनी *लेडी रॉबिन हुड*. नाडिया की इन फिल्मों ने दर्शकों का एक अलग वर्ग तैयार किया. ये वे लोग थे जो नाडिया की जांबाजी के कारनामे देखकर मंत्रमुग्ध हो जाया करते थे.

क्या आप यकीन करेंगे कि अपने लंबे कैरियर में नाडिया ने खतरनाक से खतरनाक सीन में भी कभी डुप्लीकेट से काम नहीं करवाया और न कभी ट्रिक फोटो की मदद ली. उस जमाने में डुप्लीकेट होते ही नहीं थे. इसीलिए चाहे भागते घोड़े से छलांग लगानी होती, दौड़ती कार में से कूदना होता या एक छत से दूसरी छत पर छलांग मारनी होती, सब स्टंट नाडिया खुद ही करती थीं. नाडिया की मां बेटी की इन हरकतों के खिलाफ थीं. वह नहीं चाहती थीं कि उनकी इकलौती बेटी बार-बार अपनी जान जोखिम में डाले. लेकिन स्टंट क्वीन को कैसा भी खतरनाक स्टंट हो, डर ही नहीं लगता था. बल्कि उसे ये सब करने में बड़ा मजा आता था. अपने पूरे कैरियर में नाडिया कई बार मौत के मुंह से बाल-बाल बचीं. *हंटरवाली* की शूटिंग में वह अचानक ऊपर छत से गिरीं. वह तो गनीमत हुई कि उनको गिरता देख एक आदमी ने दौड़कर उनको बीच में रोकने की कोशिश की जिससे वह गिरीं तो, लेकिन उन्हें चोट नहीं लगी. एक बार एक फिल्म की शूटिंग के बीच घोड़ा उन पर आन गिरा. बेचारी नाडिया को तीन महीने पलंग पर लेटना पड़ा. एक बार नदी में गिरीं और बहाव के साथ तेजी से उस जगह की तरफ बढ़ने लगीं जहां पानी नीचे गिर रहा था. तब कुछ तेराकों ने कूदकर नाडिया को बाहर खींच लिया, नहीं तो न जाने क्या हो जाता. ऐसे ही एक बार चलती ट्रेन की छत पर दौड़ते हुए एक डिब्बे से दूसरे डिब्बे पर छलांग लगाते हुए बीच में गिरने से बाल-बाल बचीं. ईश्वर में आस्था रखने वाली नाडिया अमावस्या को अशुभ मानती थीं इसलिए उस दिन वह शूटिंग तो कर लेती थीं लेकिन स्टंट नहीं करती थीं.

अपने 25 वर्ष के लंबे फिल्म-कैरियर में तरह-तरह के स्टंट करने वाली नाडिया ने कभी अपनी कोई हड्डी नहीं तुड़वाई. हड्डी टूटी भी तो 80 साल की उम्र में, वह भी अपने घर पर. वह कमरे के भीतर जा रही थीं कि अचानक कालीन में पैर फंस गया. वह गिरीं तो पैर की हड्डी टूट गई. हफ्तों पांव पर प्लास्टर बंधा रहा. तब कहीं जाकर पैर ठीक हुआ. अब नाडिया इस दुनिया में नहीं हैं. अपने जीवन के अंतिम दो दशक उन्होंने अपने पति होमी वाडिया के साथ बड़े मजे में बिताए. वह वीडियो पर फिल्में देखती थीं. ताश खेलतीं थीं, क्लब जातीं, पार्टियां देतीं, पार्टियों में भी जातीं. रेस खेलना पति-पत्नी का प्रिय शौक था. इसलिए जब भी संभव होता, रेसकोर्स चली जाती थीं. आज की फिल्मों में चित्रित स्टंट्स के बारे में नाडिया ने ठीक ही कहा था कि हमारे जमाने में स्टंट्स में रोमांच होता था, सनसनी होती थी. लेकिन आज के स्टंट में हिंसा होती है, हत्याएं होती हैं, खून-खराबा होता है, जो समाज पर बुरा असर डालता है.

बॉलीवुड में दर्जनों नहीं, सैकड़ों अभिनेत्रियां आईं. कितनों ने नाम और दाम कमाया व लोकप्रियता प्राप्त की, लेकिन नाडिया सिर्फ एक आई और अब तक कोई दूसरी उनकी जगह नहीं ले पाई है. शायद ले भी न पाए, क्योंकि आज की नजाकत वाली हीरोइनों में नाडिया का फौलादी दिल, बिजली की सी फुर्ती और बिना डुप्लीकेट के काम करने का हौंसला आएगा भी कहां से. क्या हम इन नाजुक जिस्म वाली हीरोइनों से हंटरवाली नाडिया जैसी दिलेरी व जांबाजी की अपेक्षा कर सकते हैं? नहीं, शायद कभी नहीं.

- बच्चन श्रीवास्तव